

मनोहर श्याम जोशी के उपन्यासों में नारी समस्या

डॉ. लालजीत राम

असिस्टेंट प्रोफेसर— हिंदी

पं. रामलखन शुक्ल राजकीय स्नातकोत्तर, महाविद्यालय आलापुर, अम्बेडकर नगर, उ०प्र०

शोध सारांश— मनोहर श्याम जोशी हिंदी साहित्य के ऐसे उपन्यासकार हैं जिन्होंने बदलते भारत की 'नई समस्याओं' को व्यंग्य और यथार्थ के साथ लेखनी आरम्भ की। उनकी रचनाएँ 70.80 के दशक के शहरी मध्यवर्ग की मानसिकता, मीडिया क्रांति और बाजारवाद की दस्तावेज हैं। 'कसप' उपन्यास नई समस्या का सबसे बड़ा उदाहरण है। यहाँ समस्या प्रेम की नहीं, बल्कि 'प्रेम के बाजार' की है। नायक बाबू और नायिका डी.डी. दोनों नौकरी पेशा हैं। उनके बीच रिश्ता है, पर स्थायित्व नहीं। यह आजाद ख्याल वाले युवा वर्ग की समस्या है जो परंपरा तोड़ चुका है, पर नई नैतिकता गढ़ नहीं पाया। 'लिव-इन', करियर और व्यक्तिगत स्पेस का द्वंद्व पहली बार हिंदी उपन्यास में इतनी बेबाकी से आया।

'हमजाद' में कश्मीर समस्या के बहाने पहचान का संकट दिखता है। आतंकवाद, राजनीति और आम कश्मीरी की दुविधा को जोशी जी ने व्यंग्यात्मक संवादों से उठाया। यह 'राष्ट्रीय बनाम क्षेत्रीय' अस्मिता की नई समस्या थी, जो 90 के दशक में विस्फोटक बनी। जोशी के यहाँ 'नई समस्या' का मतलब भूख या गरीबी नहीं, बल्कि उत्तर-आधुनिक जीवन की खालीपन है। सूचना विस्फोट के बावजूद संवादहीनता, रिश्तों का अस्थायित्व, महानगर की अकेलेपन, और मूल्यहीनता उनके पात्रों को घेरती है। वे समाधान नहीं देते, बल्कि आईना दिखाते हैं। उनका व्यंग्य बताता है कि हम जिस 'आधुनिकता' का जश्न मना रहे हैं, वह नई उलझनें भी साथ लाई है। यही मनोहर श्याम जोशी के उपन्यासों को समकालीन बनाता है।

मूलशब्द— बखूबी, रोजमर्या, विद्रूपता, पराधीनता, सुपुर्द, खुफिया, त्रासदी, तन्त्रात्मक।

मनोहर श्याम जोशी के उपन्यास यथार्थ को अभिव्यक्त करने वाली रचना है। अतः उनके साहित्य में समाज का जीवन के यथार्थ का सहज रूप देखा जा सकता है। उनका उपन्यास नई समस्याओं से ग्रस्त है, कहीं भी उसे उन समस्याओं से छुटकारा नहीं मिलता। जीवन के हर मोड़ पर हर रास्ते पर समस्याओं से संघर्ष मानव उनके लिए आवश्यक हो गया है। इन्हीं समस्याओं का चित्रण जोशी ने अपने उपन्यास में बखूबी ढंग से किया है समस्या चाहे व्यक्तिगत से जुड़ी हो या परिवार से उपन्यासकार को उन समस्याओं को पात्रों के माध्यम से सुलझाना ही पड़ता है।

हिंदी कथा साहित्य में नारी एक पात्र के रूप में सामने आती है, वह किसी परिवार समाज की अभिन्न हिस्सा है, उसके बिना सामाजिक संरचना संभव नहीं है। सामाजिक बदलाव के साथ-साथ नारी की निरीह स्थिति में बदलाव आया है और वह अबला से सबला बनने की तरह अग्रसर हुई हैं, वह अपने अधिकारों के प्रति सजग और सचेत है, पुरुष तन्त्रात्मक समाज के बंधन के खिलाफ उसने विद्रोह किया है और समाज में सहभागिता उपस्थिति की है। जिसके कारण इस सजगता से टकराहट संभव है, जिसका कारण टूटा हुआ परिवार, समाज और विभिन्न रूपों में देखने को मिल रहा है। डॉ० राजेंद्र यादव जी स्वीकार करते हुए लिखते हैं कि 'भीड़ भरी सड़कों पर नजर डालते ही लगता है कि पहले की तुलना में आज की स्त्री ज्यादा सुखी है, सारे बोझ के

लिए वह कम से कम चल तो पा रही है, खुले आकाश में मुक्त आंगन को देख तो पा रही हैं, धरना और जुलूसों में शामिल तो हैं। संस्कृतवादी अतीत के जिस स्वर्ण युग की चर्चा चल रही थी, उसमें एक भी मेधा पाटकर, किरण बेदी या धर्म कुमार नहीं थी। अतीत में स्त्री ने विरोध की भाषा ही नहीं सीखी थी। आज स्त्री प्रतिशोध की भाषा जानती है।¹ आधुनिक नारी पुरुष-महिला समता में विश्वास करती हैं। समय ने महिलाओं को अबला की छवि से बाहर निकाल कर एक नए जुझारू व्यक्तित्व और रचनाशील भूमिका में उपस्थित हुई है। दैनिक जीवन की समस्या के आधार पर देखा जाए तो रोजमर्या की जिंदगी में नारी को अधिकतम संघर्ष करना पड़ता है।

आधुनिक परिवेश में नारी का जीवन मशीन की भांति संघर्ष कर रही हैं, भीड़ में रखकर भी किसी से जुड़ न पाने की त्रासदी से आज का मनुष्य मंत्रस्थ है, यही संक्रांत पारिवारिक जीवन को विघटित कर रही है। 'हमजाद' उपन्यास का पात्र टी0 के0 अपने दोस्त की प्रेमिका मैना से विवाह करता है। उससे बच्चे पैदा होते हैं, जिसे वह नाजायज औलाद मानता है। अपने दोस्त तखतराम और पत्नी के संबंध को लेकर रिश्ता तोड़ना चाहता है। 'कमिना हरकत तो तू मेरे बेडरूम में कई दिनों से कर रहा है। मैं वहां मौजूद नहीं रहता मगर खुफिया कैमरा तो चौबीसों घंटे वहीं रहता है। तू गवाही नहीं देगा तो यह तस्वीर देंगी। जा, मैना को समझा कि तलाक देने और जयकिशन को मुझे सुपुर्द करने को राजी हो जाय। नहीं तो अदालत में मुझे इन तस्वीरों का इस्तेमाल करना पड़ेगा।'¹ इस प्रकार टी0के0 अपनी पत्नी पर तखतराम और मैना की अश्लील तस्वीर दिखाता है और तलाक करने के लिए मजबूर करता है। जिससे पारिवारिक विघटन सामाजिक विद्रूपता बढ़ती है।

आज नारी हृदय की भावनाओं और यौवन के अधिकारों को वह जबरदस्ती कुचलने नहीं देती। चहारदिवारी के कटघरे से निकालकर स्वच्छंद जीवन यापन करना चाहती है। जिससे पति-पत्नी में सौहार्दपूर्ण जीवन में बांधा आ जाती है। 'वधस्थल' उपन्यास की कहानी सोमा और अभिनव के इर्द-गिर्द घूमती है। सोमा विवाहित नारी होकर भी अभिनव के प्रति आकर्षित है। अपने पति द्वारा अपना इस्तेमाल होना सोमा को हरदम खटकता है। अभिनव से मिलकर भी वह इस आशंका से घिरी है कि उसके पति ने अपने बारे में अभिनव से कुछ न कुछ कहा होगा। 'मेरे पति हर किसी समय भाव लगाना चाहते हैं। तुम्हारी सेवाएं पाने के लिए कितने की बोली लगाई उन्होंने?'² सोमा अपने पति से नाखुश है इसलिए उसे लगता है कि वह उसका फायदा उठाता है। अपने पति से विश्वास खोना तथा संशय को बढ़ावा देना पारिवारिक विघटन की ओर बढ़ता कदम है।

यहां इससे स्पष्ट होता है कि पति-पत्नी के संबंध में तनाव परिवार में विघटन का कारण है। यहां पारंपरिक स्नेह के साथ अपनत्व भावना की कमी दिखाई पड़ती है।

मनोहर श्याम जोशी अपने उपन्यास में स्त्री पति से भौतिक समृद्धि की अपेक्षा उसे एक आत्मीय भाव, प्रेम और विश्वास चाहती है। वह पुरुष की सहृदयता की प्यासी है। स्वच्छंद प्रेम के संबंध में समाज की दृष्टि अत्यंत उदार होती जा रही है। 'ट-टा प्रोफेसर' उपन्यास में ट-टा के प्रति प्रेमप्यारी के बीच प्रेम संबंध है। प्रेमप्यारी का विवाह होने के पश्चात भी ट-टा के प्रति आकर्षण तथा प्रेम संबंध है। 'नायक जब नायिका को लेकर लकड़ी और कोयले वाली कोठरी में घुसा हुआ था और वह उसे मुख-मैथुन का सुख दे रही थी और वह स्वयं खिड़की के पर्दे का जरा-सा एक ओर करके मुख्य मकान पर नजर रखे हुआ था।'³ प्रेमप्यारी अपना विवाह तय होने के बाद भी निरंतर ट-टा के प्रति आकर्षित होती है और उसके साथ प्रेम में आतुर होकर अपनी नग्न तस्वीर भी प्रस्तुत करती है। इस प्रकार वह अपना स्वतंत्र जीवन व्यतीत करना चाहती है।

मनोहर श्याम जोशी अपनी रचनाओं में स्त्री की व्यक्तिगत स्वतंत्रता प्रस्तुत किया है और यह बताना चाहा है कि समाज में स्त्री अपना व्यक्तिगत स्वतंत्रता खोना नहीं चाहती। आज की नारी एक नई स्वतंत्र चेतना से संपन्न है, वह पति के द्वारा किए

जाने वाला अन्याय और उत्पीड़न के प्रति सिर्फ जागृति नहीं है बल्कि उसका भरपूर विरोध भी करती है। पुरुष प्रधान समाज में पुरुष हमेशा स्त्री को दबाना चाहता है, लेकिन निर्भीक, निडर होकर जवाब सवाल करती है। 'इस आशंका से तुम क्यों डरो, मैं हूँ न डरने को। बस अनुरोध है कि कितना भगाए भी तो अब मत भाग जाना तुम। सीधे-साधे ढंग से तो शायद कदाचित कभी भी न भगाए तुमको। तुमको अपार प्यार करते हैं। और जानते हो कि तुम मेरे आदर्श हो। मैं नहीं डरती उनसे? तुम भी निडर रहना।'⁴ वैवाहिक संबंध की नींव परस्पर विश्वास पर होती है। पुरुष प्रधान व्यवस्था में अन्याय और अत्याचार होते रहते हैं। इन सभी परिस्थितियों में पीड़ामय जीवन व्यतीत करती हुई नारी अपना जीवन बिताती है।

मनोहर श्याम जोशी ने अपनी कथा साहित्य में नारी की सबसे बड़ी विवशता उसकी आर्थिक पराधीनता है। आर्थिक दृष्टि पर निर्भर नारियों को बड़ी अव्यवस्था के साथ जीवन यापन करना पड़ता है। पुरुष की हर तरह के अत्याचार को झेलने के लिए विवश हो जाती है। नारी को समाज और परिवार में हेय दृष्टि से देखा जाता है, नारी की स्वतंत्रता भी आर्थिक स्वतंत्रता पर निर्भर है। अर्थ के कारण ही नारी का शोषण होता है। आर्थिक स्वतंत्रता के कारण पारिवारिक एकता नष्ट होती है। इस संदर्भ में गंगा प्रसाद विमल ने लिखा है— 'मनुष्य की आस्था पैसों पर टिकी हुई है, क्योंकि उसने देखा है कि संबंधों के ऊपर सबसे बड़ी चीज काम करती है वह है पैसा। वही संबंधों को बनाता और बिगड़ता है।'⁵ आर्थिक समस्या के कारण समयानुकूल नारी को अपमानित होना पड़ता है। नारी की समस्या को जोशी ने अपनी कहानियों में भी चित्रित किया है और यह बताना चाहा है कि आर्थिक समस्या के कारण नारी अपना शरीर भी बेचती है, इसी कारण अर्थाभाव से नारी की स्थिति दैनिक बनी हुई है। ऐसी हालत में नारी को विवशता स्वीकार करनी पड़ती है। 'हमजाद' उपन्यास में मैना अपने घर की खस्ता हालत से परेशान वह ट्यूशन करके घर को संभाल रही है। तखतराम और टी०के० से उसका परिचय होता है। टी०के० मैना को पाने के लिए कर्ज के तौर पर पैसे उसके बाप को देता है और हवेली गिरवी रखता है। इधर तखतराम और मैना के बीच प्रेम पनपता है। मैना तखतराम से शादी करना चाहती है लेकिन उससे टी०के० का कर्ज उतारना चाहती है। तखतराम की लिखी कथा से मालूम होता है कि मैना उसके शयन कक्ष में थी, टी०के० को दिखाने से वह उसका फायदा उठाता है। जब मैना को इस बारे में पता चलता है तो वह तखतराम को झापड़ मारती है। 'एक तो तुमने मुझे मां बनने की राह पर लगा दिया और दूसरे तुमने टी० के० का कर्ज उतारने के लिए रकम देने की बजाय उसे अपने और मेरे बारे में सारी बातें बता दी है। अब और क्या करना चाहते हो कमीने?'⁶ यह कहा जा सकता है कि मनोहर श्याम जोशी के साहित्य में ज्यादातर नारी के साथ शरीर बेचना तथा अनमेल विवाह जैसी घटनाएं घटित हुई हैं जो अर्थाभाव के कारण हैं। आज नारी शिक्षा, नौकरी में आरक्षण, वित्तीय सहायता योजनाओं और सुविधाओं के कारण नारी आत्मनिर्भर बन रही है।

संदर्भ ग्रंथ—

- 1- प्रभा खेतान, 'निषेध और अमूर्तन में फंसा स्तीत्व का मानचित्र', हंस डॉ० राजेंद्र यादव संपा— नई दिल्ली अक्षर प्रकाशन सितंबर 2000 पृष्ठ सं०— 34
- 2- मनोहर श्याम जोशी, हमजाद, एड नई दिल्ली राजकमल पेपर बैक प्र० सं० 1999 पृ० सं०— 105
- 3- मनोहर श्याम जोशी, वधस्थल, नई दिल्ली नेशनल प्र० सं० 2009 पृ० सं०—207
- 4- मनोहर श्याम जोशी, ट—टा प्रोफेसर, नई दिल्ली राजकमल, पेपरबैक प्र० सं०— 2001 पृ० सं०— 85
- 5- मनोहर श्याम जोशी, वधस्थल, नई दिल्ली प्र० सं०—2009 पृ० सं०—116

- 6- संपादक—गंगा प्रसाद विमल, आधुनिक हिंदी कहानी नई दिल्ली द मैकमिलन कं० प्र०सं०— 1975 पृ०सं०— 79
- 7- मनोहर श्याम जोशी, हमजाद, नई दिल्ली राजकमल पेपरबैक प्र० सं०—1999 पृ० सं०—94